# विकल्प – क्यों ? कैसे ?

## प्राक्कथन

मानव बंधुओं !

अभी तक विगत से चली आयी ईश्वरवाद और भौतिकवाद की नजरिया से मानव का अध्ययन सम्पन्न नहीं हुआ। यह सूचना देते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता हूँ कि विकल्प अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन है। मध्यस्थ दर्शन-सहअस्तित्व में, से, के लिए मानव का अध्ययन संभव हो गया है।

इस विकल्प में आपको अवगत कराने का प्रयत्न है कि मानव का अध्ययन मानव चेतना सम्मत मूल्य शिक्षा विधि से सर्वसुलभ होने का सभी निरीक्षण, परीक्षण, सर्वेक्षण सम्पन्न हो चुका है। ऐसे केन्द्र में से एक अभ्युदय संस्थान छत्तीसगढ़ की सीमा में कार्यरत है।

इस सूचना में यह भी प्रस्तुत कर रहे हैं कि सर्व मानव समझदार न्याय पूर्वक जी सकता है, हर समझदार परिवार समाधान-समृद्धि पूर्वक जी सकता है। यह शिक्षा विधि से सर्व सुलभ होने की व्यवस्था है। आप अपने सद्विवेक से प्रस्तुत सूचनाओं से अवगत होंगे । यही विश्वास है।

आपका

ए. नागराज, प्रणेता

मध्यस्थ दर्शन सह अस्तित्ववाद

भजनाश्रम, अमरकंटक,

जिला-शहडोल (म.प्र.)

# विकल्प

1. अस्थिरता, अनिरचयता मूलक भौतिक रासायनिक वस्तु केन्द्रित विचार बनाम विज्ञान विधि से **मानव का अध्ययन नहीं हो पाया।** रहस्य मूलक आदर्शवादी चिंतन विधि से भी मानव का अध्ययन नहीं हो पाया। दोनों प्रकार के वादों में मानव को जीव कहा गया है।
   विकल्प के रूप में प्राप्त अस्तित्वमूलक मानव केन्द्रित चिंतन विधि से मध्यस्थ दर्शन, सहअस्तित्ववाद में मानव को ज्ञानावस्था में होने का पहचान किया एवं कराया।

   मध्यस्थ दर्शन के अनुसार मानव ही ज्ञाता (जानने वाला), सहअस्तित्वरूपी अस्तित्व जानने मानने योग्य वस्तु अर्थात् जानने के लिए संपूर्ण वस्तु है यही दर्शन ज्ञान है इसी के साथ जीवन ज्ञान व मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान सहित सहअस्तित्व प्रमाणित होने की विधि अध्ययनगम्य हो चुकी है।

   अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन ज्ञान, मध्यस्थ दर्शन, सहअस्तित्ववाद-शास्त्र रूप में अध्ययन के लिए मानव सम्मुख मेरे द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

2. अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन के पूर्व मेरी (ए. नागराज, अग्रहार नागराज, जिला हासन, कर्नाटक प्रदेश, भारत) दीक्षा अध्यात्मवादी ज्ञान वैदिक विचार सहज उपासना कर्म से हुई।

3. वेदान्त के अनुसार ज्ञान "ब्रह्म सत्य, जगत मिथ्या" जबकि ब्रह्म से जीव जगत की उत्पति बताई गई।

   उपासना :- देवी देवताओं के संदर्भ में

   कर्म :- स्वर्ग मिलने वाले सभी कर्म (भाषा के रूप में)

मनु धर्म शास्त्र में :- चार वर्ण चार आश्रमों का नित्य कर्म प्रस्तावित है।

कर्म काण्डों में :- गर्भ संस्कार से मृत्यु संस्कार तक सोलह प्रकार के कर्म काण्ड मान्य है एवं उनके कार्यक्रम है।

इन सबके अध्ययन से मेरे मन में प्रश्न उभरा कि -

4. सत्यम् ज्ञानम् अनन्तम् ब्रह्म से उत्पन्न जीव जगत मिथ्या कैसे है ? तत्कालीन वेदज्ञों एवं विद्वानों के साथ जिज्ञासा करने के क्रम में मुझे:-
   समाधि में अज्ञात के ज्ञात होने का आश्वासन मिला। शास्त्रों के समर्थन के आधार पर साधना, समाधि, संयम कार्य सम्पन्न करने की स्वीकृति हुई। मैंने साधना, समाधि, संयम की स्थिति में संपूर्ण अस्तित्व सहअस्तित्व होने, रहने के रूप में अध्ययन, अनुभवपूर्ण विधि से समझ को प्राप्त किया जिसके फलस्वरूप मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्व वाद वाङ्मय के रूप में विकल्प प्रकट हुआ।

5. आदर्शवादी शास्त्रों के अनुसार- रहस्य मूलक ईरवर केद्रित चिंतन ज्ञान तथा परम्परा के अनुसार- ज्ञान अव्यक्त अनिर्वचनीय
   विकल्प के अनुसार- ज्ञान व्यक्त वचनीय अध्ययन विधि से बोध गम्य, व्यवहार विधि से प्रमाण सर्व सुलभ होने के रुप में स्पष्ट हुआ।

6. अस्थिरता, अनिश्चितता मूलक भौतिकवाद के अनुसार वस्तु केंद्रित विचार में विज्ञान को ज्ञान माना जिसमें नियमों को मानव निर्मित करने की बात कही गयी है। इसके विकल्प में सहअस्तित्व रुपी अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन ज्ञान के अनुसार अस्तित्व स्थिर, विकास और जागृति निरिचत सम्पूर्ण नियम प्राकृतिक होना, रहना प्रतिपादित है।

7. अस्तित्व केवल भौतिक रासायनिक न होकर भौतिक रासायनिक एवं जीवन वस्तुयें व्यापक वस्तु में अविभाज्य वर्तमान है यही "मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद" शास्त्र सूत्र है।

## सत्यापन

8. मैंने जहाँ से शरीर यात्रा शुरू किया वहाँ मेरे पूर्वज वेदमूर्ति कहलाते रहे। घर-गाँव में वेद व वेद विचार संबं धित वेदान्त, उपनिषद तथा दर्शन ही भाषा ध्वनि-धुन के रुप में सुनने में आते रहे। परिवार परंपरा में वेदसम्मत उपासना-आराधना-अर्चना-स्तवन कार्य सम्पन्न होता रहा।

9. हमारे परिवार परंपरा में शीर्ष कोटि के विद्वान सेवा भावी तथा श्रम शील व्यवहाराभ्यास एवं कर्माभ्यास सहज रहा जिसमें से श्रमशीलता एवं सेवा प्रवृत्तियाँ मुझको स्वीकार हुआ। विद्वता पक्ष में प्रश्नचिन्ह रहे।

10. **प्रथम प्रश्न उभरा** कि -

ब्रह्म सत्य से जगत व जीव का उत्पत्त मिथ्या कैसे ?

**दूसरा प्रश्न -**

ब्रह्म ही बंधन एवं मा ेक्ष का कारण कैसे ?

**तीसरा प्रश्न -**

शब्द प्रमाण या शब्द का धारक वाहक प्रमाण ?

आप्त वाक्य प्रमाण या आप्त वाक्य का उद्गाता प्रमाण ?

शास्त्र प्रमाण या प्रणेता प्रमाण ?

समीचीन परिस्थिति में एक और प्रश्न उभरा

**चौथा प्रश्न-**

भारत में स्वतंत्रता के बाद संविधान सभा गठित हुआ जिसमें राष्ट्र, राष्ट्रीयता, राष्ट्रीय-चरित्र का सूत्र व्याख्या ना होते हुए जनप्रतिनिधि पात्र होने की स्वीकृति संविधान में होना।

**वोट-नोट** (धन) गठबंधन से जनादेश व जनप्रतिनिधि कैसा ?

संविधान में धर्म निरपेक्षता - एक वाक्य, एवं उसी के साथ अनेक जाति, संप्रदाय, समुदाय का उल्लेख होना।

संविधान में समानता - एक वाक्य, उसी के साथ आरक्षण का उल्लेख और संविधान में उसकी प्रक्रिया होना

जनतंत्र - शासन में जनप्रतिनिधियों की निर्वाचन प्रक्रिया में वोट-नोट का गठबंधन होना।

ये कैसा जनतंत्र है ? समानता व धर्म निरपेक्षता ?

11. इन प्रश्नों के जंजाल से मुक्ति पाने को तत्कालीन विद्वान, वेदमूर्तियों, सम्मानीय ऋषि महारिषियों के सुझाव से-

(1) अज्ञात को ज्ञात करने के लिए समाधि एक मात्र रास्ता बताये जिसे मैंने स्वीकार किया।

(2) साधना के अनुकूल स्थान के रूप में अमरकण्टक को स्वीकारा।

(3) सन् 1950 से साधना कर्म आरम्भ किया।

सन् 1960 के दशक में साधना में प्रौढ़ता आई।

(4) सन् 1970 में समाधि सम्पन्न होने की स्थिति स्वीकारने में आया। समाधि स्थिति में मेरे आशा विचार इच्छायें चुप रहीं। ऐसी स्थिति में अज्ञात को ज्ञात होने की घटना शून्य रही यह भी समझ में आया। यह स्थिति सहज साधना हर दिन बारह से अट्ठारह घंटे तक होती रही।

समाधि, ध्यान, धारणा क्रम में संयम स्वयम् स्फूर्त प्रणाली मैंने स्वीकारी। दो वर्ष बाद संयम होने से समाधि होने का प्रमाण स्वीकारा। समाधि से संयम सम्पन्न होने की क्रिया में भी 12 घण्टे से 18 घण्टे लगते रहे। फलस्वरुप संपूर्ण अस्तित्व सह-अस्तित्व सहज रूप में रहना होना मुझे अनुभव हुआ। जिसका वाङ्गमय "मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद" शास्त्र के रुप में प्रस्तुत हुआ।

12. सहअस्तित्व :- व्यापक वस्तु में संपूर्ण जड़ चैतन्य संपृक्त एवं नित्य वर्तमान होना समझ में आया।

सहअस्तित्व में ही :- परमाणु में विकासक्रम के रुप में भूखे अजीर्ण व परमाणु में ही विकास पूर्वक तृप्त गठनपूर्ण परमाणुओं के रूप में जीवन होना, रहना समझ में आया।

सहअस्तित्व में ही :- गठनपूर्ण परमाणु चैतन्य इकाई-जीवन रुप में होना समझ में आया।

सहअस्तित्व में ही :- भूखे व अजीर्ण परमाणु अणु व प्राणकोषाओं से ही सम्पूर्ण भौतिक व रासायनिक रचनायें तथा परमाणु अणुओं से रचित धरती तथा अनेक धरतियों का रचना स्पष्ट होना समझ में आया।

13. अस्तित्व में भौतिक रचना रुपी धरती पर ही यौगिक विधि से रसायन तंत्र प्रक्रिया सहित प्राणकोषाओं से रचित रचनायें संपूर्ण वन-वनस्पितियों के रूप में समृद्ध होने के उपरांत प्राणकोषाओं से ही जीव शरीरों का रचना रचित होना और मनुष्य शरीर का भी रचना सम्पन्न होना व परंपरा होना समझ में आया।

14. सहअस्तित्व में ही :- शरीर व जीवन के संयुक्त रुप में मानव परंपरा होना समझ में आया। सहअस्तित्व में से के लिए :- सहअस्तित्व नित्य प्रभावी होना समझ में आया। यही नियतिक्रम होना समझ में आया।

15. नियति विधि :- सहअस्तित्व सहज विधि से ही -

a. अस्तित्व में चार अवस्थाएँ
   - पदार्थ अवस्था
   - प्राण अवस्था
   - जीव अवस्था
   - ज्ञान अवस्था और

b. अस्तित्व में चार पद
   - प्राणपद
   - भ्रांति पद
   - देव पद
   - दिव्य पद

c. और
   - विकास क्रम, विकास
   - जागृति क्रम, जागृति है।

जागृति सहज मानव परंपरा ही मानवत्व सहित व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी नित्य वैभव होना समझ में आया। इसे मैं सर्वशुभ सूत्र माना और सर्वमानव में शुभापेक्षा होना स्वीकारा फलस्वरूप चेतना विकास मूल्य शिक्षा, संविधान, आचरण व्यवस्था सहज सूत्र व्याख्या, मानव सम्मुख प्रस्तुत किया हूँ।

भूमि स्वर्ग हो, मनुष्य देवता हो

धर्म सफल हो, नित्य शुभ हो।

- ए. नागराज

## विकल्प का स्वरुप कार्य-व्यवहार रुप में

16. विकास क्रम में पदार्थ अवस्था एवं प्राण अवस्था है।

पदार्थावस्था :- धरती में संपूर्ण प्रकार के खनिजों से सम्पन्न होने के उपरांत।

प्राणावस्था :- सभी प्रकार के वन बड़े छाेटे जंगल अनेक प्रकार के वनस्पितियों से सम्पन्न होना पाया जाता है। वन खनिजों के संतुलन में मौसम संतुलित रहना, यह भी समझ में आया।

साथ में यह भी समझ में आया कि मानव जागृति क्रम में जीव चेतनावश जीता हुआ समुदाय परंपराओं में मानव ही पशु मानव, राक्षस मानव के रुप में छल, कपट, दंभ, पाखण्ड, द्रोह, विद्रोह, शोषण, युद्ध, साम, दाम, दण्ड, भेद रुपी कुचक्रवश सम्पूर्ण प्रकार के अपराध करना वैध मानकर जीना होता रहा जिससे धरती बीमार हो गई। खनिज कोयला, खनिज तेल और विकिरणीय धातुओं को धरती में से अपहरण करना धरती के साथ अपराध स्पष्ट है। इस क्रम में धरती बीमार हो गयी और मानव के रहने लायक बचेगी कि नहीं यह प्रश्नचिन्ह लग गया है। इसके विकल्प में प्रवाह बल से ऊर्जा प्राप्त करने का सुझाव है। सौर ऊर्जा संबंधी उपकरणों को सस्ता बनाने के लिए, हवा तरंग को ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करने के लिए सुझाव है। यह राष्ट्रीय योजना के अंतर्गत सोचने के लिए मुद्दा सुझाया गया।

17. जीव चेतना का प्रमाण धरती पर सभी संविधानों में गलती को गलती से रोकना, अपराध को अपराध से रोकना, युद्ध को युद्ध से रोकना के स्वरुप में देखने को मिला। इसे वैध माना।

- शिक्षा में लाभोन्माद, कामोन्माद, भोगोन्मादी कार्य व्यवहार के लिए प्रोत्साहन देना।

- सभी प्रकार के प्रचार माध्यम भय और प्रलोभन के अर्थ में कार्यरत है यही मानव जाति की हैसियत है ऐसा मुझे समझ में आया।

18. उक्त कारणों से उनमें विकल्प प्रस्तुत करने की स्वीकृति हुई जो - सहअस्तित्ववादी विधि से आवर्तनशील अर्थशास्त्र, व्यवहारवादी समाजशास्त्र, मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान शास्त्र प्रस्तुत है।

जिसमें जीवनमूल्य - सुख-शांति-संतोष-आनन्द, मानव लक्ष्य रुपी समाधान-समृद्धि-अभय-सहअस्तित्व सहज परंपरा में दश सोपनीय व्यवस्था विधि से सफल होने का संभावना प्रमाण वर्तमान होना प्रस्तावित है।

19. मानवीय मूल्य - धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करुणा एवं मानव लक्ष्य - समाधान, समृद्धि, अभय (वर्तमान में विश्वास चारों अवस्थाओं के साथ) वर्तमान होना प्रस्तावित है।
मानव संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था सहज प्रमाण वर्तमान होना प्रस्तावित है यही सहअस्तित्व है।

स्थापित मूल्य - परस्पर संबंधों की पहचान, संबंधों में मूल्यों का निर्वाह होना ही संस्कृति नित्य उत्सव सहज वैभव अखण्ड समाज सूत्र व्याख्या सहज प्रमाण वर्तमान होना प्रस्तावित है।

शिष्ट मूल्यों के साथ वस्तुओं का आदान, प्रदान, अर्पण, समर्पण क्रियाकलाप रुप में नित्य उत्सव होना ही मानव चेतना सहज वैभव है। यह भी प्रस्तावित है।

मानव चेतना ही व्यवहार में मानवत्व है। आचरण में नियम है।

20. मानवत्व समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व रुप में प्रमाण वर्तमान उत्सव है।

मानव चेतना सहज ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्मत सोच विचार योजना कार्ययोजना व्यवहार फल परिणाम विज्ञान विवेक ज्ञान सम्मत होना ही नित्य "समाधान" उत्सव यही मानव चेतना सहज वैभव है। मानव चेतना सहज वैभव ही मानवत्व है।

**ज्ञान** - सहअस्तित्व रूपी

- अस्तित्व दर्शन ज्ञान
- जीवन ज्ञान
- मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान

**विवेक** -

- जीवन सहज अमरत्व
- शरीर सहज नश्वरत्व
- व्यवहार सहज नियम

**मानवीयतापूर्ण आचरण -**

- स्वधन, स्वनारी, स्वपुरुष दयापूर्ण कार्य व्यवहार
- संबंध, मूल्य, मूल्यांकन, उभय तृप्ति
- तन, मन, धन रुपी अर्थ का सदुपयोग व सुरक्षा

**विज्ञान** -

- काल, क्रिया, निर्णयवादी ज्ञान
- क्रिया की अवधि - काल
- क्रिया नित्य वर्तमान

सहअस्तित्व में सम्पूर्ण प्रकृति क्रिया स्वरुप में वर्तमान क्रिया - श्रम, गति, परिणाम

परिणाम का अमरत्व - गठनपूर्ण परमाणु चैतन्य इकाई जीवन

श्रम का विश्राम - मानव चेतना सम्पन्न परंपरा अखण्ड समाज सूत्र

व्याख्या औ र सार्वभौम व्यवस्था सहज सू त्र

व्याख्या = अभ्युदय

ऐषणा प्रवृत्ति - पुत्रेषणा, वित्तेषणा, लोकेष्णा ।

गति का गंतव्य - दिव्य चेतना सहज वैभव रुप में उपकार प्रवृत्त सिर्वशुभ रुप में।

यह सब अध्ययनगम्य एवं जीना मानव में, से, के लिए।

# प्रयोजन संभावना

21. धरती पर 700 करोड़ मानव अपराध कार्य प्रवृत्तियों से मुक्ति पाने के लिए हर नर-नारी का समझदार होना।

समझदारी से समाधान-सहज प्रमाण वर्तमान होना।

समाधान सम्पन्न हर परिवार में श्रम नियोजन पूर्वक समृद्धि प्रमाणित होना, समाधान समृद्धि सम्पन्न हर परिवार में उपकार कार्य प्रवृत्तियों का प्रमाणित होना समीचीन है।

22. चेतना विकास मूल्य शिक्षा संस्कार सहित तकनीकी शिक्षण विधि से ही हर परिवार अखण्ड समाज सूत्र व्याख्या तथा सार्वभौम व्यवस्था सूत्र व्याख्या रुप में जीना ही समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व सहज परंपरा वैभवित होना यही अपराध मुक्त परम्परा होना समीचीन है।

हर नर-नारी स्वयं में नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य सहज प्रमाण रुप में वर्तमान वैभव होना आवश्यक है।

23. चेतना विकास मूल्य शिक्षा रुप में अध्ययन के लिए अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन ही मध्यस्थ दर्शन चार भागों में -

a) मानव व्यवहार दर्शन
b) मानव कर्म दर्शन
c) मानव अभ्यास दर्शन
d) मानव अनुभव दर्शन

24. दर्शनों पर आधारित विचार-वाद तीन भागों में -

a) समाधानात्मक भौतिकवाद

b) व्यवहारात्मक जनवाद

c) अनुभवात्मक अध्यात्मवाद

25. दर्शन-वाद के आधार पर शास्त्र तीन भागों में -

a) आवर्तनशील अर्थशास्त्र

b) व्यवहारवादी समाजशास्त्र

c) मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान शास्त्र

26. चिंतन - दर्शन-वाद-शास्त्र के आधार पर जीवन विद्या प्रबाेधन प्रणाली स्पष्ट है।

मानवीय आचार संहिता रुपी "संविधान व्यवस्था" (प्रकाशन प्रक्रिया में) अध्ययन के लिए प्रावधानित है, प्रस्तुत है।

27. इसी के साथ "परिभाषा संहिता" प्रस्तुत है।

## व्यक्तव्य

विकल्प के नाम से 27 मुद्दे के रुप में जो सूचना प्रस्तुत किया गया है इसके मूल अभिप्राय में अपना-पराया की दीवार से मुक्त, द्वेष मुक्त, अपराध मुक्त विधि से मानव चेतना पूर्वक समाधान समृद्धि सहित अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था सूत्र व्याख्या रुप में जीना यह मानव परंपरा के लिए आवश्यकता बन चुकी है यदि मानव को इस धरती पर परंपरा रुप में रहना है। अस्तु, सकारात्मक भाग में निर्णय लेने की स्थिति में इन सूचनाओं के आधार पर कितने भी सकारात्मक उद्देश्य से प्रश्न हो सकते हैं। उन सबका उत्तर मेरे पास सुरक्षित है जो चाहे वे इसे पा सकते हैं।

ए. नागराज

प्रणेता

मध्यस्थ दर्शन सह अस्तित्ववाद

भजनाश्रम, अमरकंटक,

जिला-अनूपपुर (म.प्र.)

**सम्पूर्ण वांडमय डाउनलोड:**

www.madhyasth.org | www.bit.ly/dpsroot